भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष की महिला नायक

डॉ0 ज्योत्स्ना गौतम,

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0

शोध सारांश

भारतीय स्वतन्त्रता अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीयों द्वारा लम्बे संघर्ष का प्रतिफल है, जिसमें भारतीय महिला नायकों द्वारा भी सहभागिता की गई, लेकिन स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में उनकी भूमिका को यथोचित स्थान प्राप्त नहीं हुआ है, यद्यपि भारतीय महिला नायकों ने आन्दोलन में सभी दृष्टि यथा–सैन्य नेतृत्व, सैनिक, क्रान्तिकारी, शान्तिपूर्ण आन्दोलन, शैक्षणिक व आध्यात्मिक आदि से इसमें सहभागिता की थी। भारतीय रियासतों की महिला शासकों द्वारा अंग्रेजों का सामना स्वयं नेतृत्व कर अपने असीम साहस का परिचय दिया गया। अनेक महिला नायकों द्वारा क्रान्तिकारी गतिविधियों से स्वयं को सम्बद्ध किया। स्वदेशी एवं बहिष्कार आन्दोलन महिलाओं की सहभागिता के कारण ही प्रसिद्धि को प्राप्त कर सके, इसके अतिरिक्त गाँधीजी द्वारा संचालित आन्दोलनों में भी समाज के सभी वर्गों की महिलाओं की सहभागिता में अत्यधिक वृद्धि हुई।

मुख्य शब्द – *आन्दोलन, स्वतन्त्रता संग्राम, महिला, शासन, जेल, ब्रिटिश सेना*

राजनीति, आन्दोलन, शासन आदि विषय भारत में परम्परागत रूप से पुरुषों तक सीमित रहे हैं लेकिन भारत में सामाजिक धार्मिक क्षेत्र में अनेक महानुभावों, यथा–राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले, जस्टिस रानाडे आदि के नेतृत्व में चले आन्दोलनों, राष्ट्रीय नवजागरण, पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव, आधुनिक मूल्यों के प्रादुर्भाव, वैज्ञानिक ज्ञान के कारण भारतीय परिदृश्य में कुछ परिवर्तन आया, फलतः भारतीय महिलाओं में राजनीतिक एवं शैक्षणिक जाग्रति का उद्भव हुआ, तत्पश्चात् गाँधीजी के नेतृत्व में सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह की नीतियों द्वारा संचालित आन्दोलनों के कारण भी महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि हुई। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन बहुपक्षीय रहा, कोई भी पक्ष ऐसा नहीं रहा, जिसमें भारतीय महिला नायकों द्वारा अपनी भूमिका का निर्वाह नहीं किया गया, यथा–सैन्य नेतृत्व, सैनिक, सत्याग्रही, आन्दोलनकारी, क्रान्तिकारी सभी रूपों में महिलाओं ने अपनी भूमिका निर्वाहित की, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में उनकी भूमिका के विवेचन के लिए प्रमुख महिला नायकों की भूमिका का उल्लेख आवश्यक है।

लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवम्बर, 1828 को वाराणसी, उत्तर प्रदेश के एक मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता बिठूर जिले के पेशवा बाजीराव द्वितीय के अधीन युद्ध के कमाण्डर थे। रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के विरुद्ध प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम 1857 में मोर्चा लिया था। 1853 में उनके पति झांसी के महाराज की मृत्यु के पश्चात् लार्ड डलहौजी ने उनके दत्तक पुत्र के सिंहासन के दावे को खारिज कर व्यपगत का सिद्धान्त लागू किया, क्योंकि राजा का कोई प्राकृतिक उत्तराधिकारी नहीं था। दामोदरराव महाराजा और रानी के दत्तक पुत्र थे, इस सिद्धान्त के अनुसार रानी को वार्षिक पेन्शन देकर झांसी के किले को छोड़ने के लिए कहा गया, क्योंकि रानी अपने अव्यस्क बेटे के लिए रीजेन्ट के रूप में शासन कर रही थीं। 1858 में ब्रिटिश सेना सर ह्यूरोज के नेतृत्व में झांसी के किले पर

आधिपत्य करने के उद्देश्य से पहुँची, ब्रिटिश सेना द्वारा आत्मसमर्पण करने की माँग को रानी ने अस्वीकार कर दो सप्ताह तक युद्ध में साहस व बहादुरी से अंग्रेजों का सामना किया। तत्पश्चात् रानी पराजित होकर कालपी पहुँची और सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ग्वालियर के किले पर तात्या टोपे और दूसरे विद्रोही सैनिकों के सहयोग से रानी ने आधिपत्य कर लिया। राष्ट्रवादी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध की प्रतीक, महान शहीद, साहसी, वीर, नारी शक्ति का प्रतीक, भारतीय स्वतन्त्रता के लिए प्राण न्यौछावर करने वाली रानी लक्ष्मीबाई 18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में अंग्रेजी सेना से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुई।

बेगम हजरत महल अवध के शासक वाजिद अली शाह की पहली पत्नी थीं, वे प्रशासनिक क्षमता की धनी थीं। इन्होंने अपने अवयस्क पुत्र बिरजिस कदर को गद्दी पर बैठाकर अंग्रेजी सेना से स्वयं संघर्ष किया तथा सैनिक दल की महिलाओं का नेतृत्व कर ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूँका। इनके साहसी होने का अनुमान इस घटना से लगाया जा सकता है कि इन्होंने मटियाबुर्ज में नजरबंद किये गये वाजिद अली शाह को छुड़ाने के लिए लार्ड केनिंग के सुरक्षा दस्ते में भी सेंध लगा दी थी। इस प्रकार सन् 1857 में बेगम हजरत महल ने अवध प्रान्त में विद्रोह की ज्वाला फैलाने में महती भूमिका निभाई, जिसके कारण विद्रोहियों का लखनऊ पर अधिकार हो चुका था और अंग्रेजों को लखनऊ की रेजीडेंसी में शरण लेनी पड़ी।

वीरांगना झलकारी बाई दुर्गा दल की सेनापति थीं, जिसका गठन रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में किया गया था, इन्होंने प्रथम स्वाधीनता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर ब्रिटिश सेना के कई हमलों का डटकर मुकाबला कर उन्हें परास्त किया। एक सैनिक के विश्वासघात के कारण झलकारी बाई के पति पूरनसिंह के किले की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त होने के उपरान्त भी झलकारी बाई ब्रिटिश सेना से संघर्ष करती रही। झलकारी बाई का उल्लेख मराठा पुरोहित विष्णुराय गोडसे की कृति 'माझा प्रवास' में मिलता है। झलकारी बाई के दुर्गादल में मोतीबाई, काशीबाई, दुर्गाबाई, जूही जैसी अनेक महिला सैनिक थी, जो अंग्रेजों से संघर्ष करते हुए अमर हो गईं।

वीरांगना ऊदादेवी अवध के नवाब वाजिद अली शाह के महिला दल की सदस्या थी, जिन्होंने प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में लखनऊ के सिकन्दरबाग के किले के हमले में 36 अंग्रेज सैनिकों को मार गिराया था, किन्तु वे पेड़ से उतरते हुए कैप्टन वेल्स की गोली का शिकार होकर वीरगति को प्राप्त हुई। अमृतलाल नागर ने अपनी कृति 'गदर के फूल' में ऊदादेवी का उल्लेख किया है।

रायगढ़ रियासत की रानी अवन्तीबाई के द्वारा 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजों का यथाशक्ति प्रतिरोध किया गया। रानी ने सैनिकों और सरदारों से कहा कि, ''भाइयों जब भारत माँ गुलामी की जंजीरों से बंधी हो तब हमें सुख से जीने का कोई हक नहीं है, माँ को मुक्त करवाने के लिए ऐशोआराम को तिलांजलि देनी होगी, खून देकर ही आप अपने देश को आजाद करा सकते हैं।'' उन्होंने अपने सैनिकों के साथ अंग्रेजी सेना से संघर्ष करते हुए आत्मसमर्पण के स्थान पर स्वयं को समाप्त करने को प्राथमिकता दी।

1857 की क्रान्ति में अंग्रेजों का प्रतिरोध करने के लिए रानी द्रोपदी बाई ने धार क्षेत्र में अपनी सेना में सभी वर्गों के लोगों को सम्मिलित किया, उन्होंने कुछ क्रान्तिकारी नेताओं से भी गठबन्धन किया। 22 अक्टूबर 1857 से ब्रिटिश सैनिकों और क्रान्तिकारियों के मध्य धार के किले पर आधिपत्य को लेकर संघर्ष आरम्भ हुआ, अन्त में अंग्रेजों ने किले को ध्वस्त कर दिया, किन्तु

रानी द्रोपदी बाई आने वाली महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत बनी।

अपने समय की कानपुर की प्रसिद्ध नर्तकी अजीमन बेगम ने एक साहसी, निर्भीक चार सौ महिलाओं की एक 'मस्तानी टोली' नाम के एक समूह को तैयार किया, इन महिलाओं के समूह द्वारा पुरुषों को स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त, युद्ध में घायल सैनिकों की सेवा एवं खाद्य सामग्री पहुँचाकर, कारतूस उपलब्ध करवाकर स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान दिया गया, किन्तु अंग्रेजों ने जब कानपुर पर आधिपत्य कर लिया तो अजीमन बेगम की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

सरोजनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में हुआ जो 'भारत कोकिला' के नाम से विख्यात हुईं। नायडू 1906 में कलकत्ता अधिवेशन में गोखले के भाषण से प्रभावित होकर राजनीति में सक्रिय हुईं, इन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों के लिए महिलाओं को जाग्रत किया। 1908 में प्राप्त 'कैसर–ए–हिन्द' सम्मान को जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के पश्चात् इन्होंने लौटा दिया था। सरोजिनी नायडू द्वारा भारत छोड़ो आन्दोलन के समय आगा खाँ महल में 21 माह तक सजा काटी, युवाओं में देशभक्ति की भावनाओं को जाग्रत करने के लिए 1915 से 1918 तक भारत की यात्रा कर देशवासियों को उनके कर्त्तव्य के लिए प्रोत्साहित करने का कार्य किया गया। इन्होंने 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय धरासना सत्याग्रह का नेतृत्व किया गया व 1917 में इनके नेतृत्व में महिला प्रतिनिधि मण्डल ने महिलाओं के लिए मताधिकार तथा शिक्षा की माँग रखी। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में इनके नेतृत्व में आठ सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने सार्वजनिक वयस्क मताधिकार तथा मिश्रित सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों की माँग भी की गई। इन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के समर्थन में आन्दोलन किये। भारत को स्वतन्त्रता दिलाने में कठिन संघर्ष करने वाली सरोजनी नायडू का उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के पद पर रहते हुए 2 मार्च 1949 को दिल का दौरा पड़ने के कारण देहावसान हो गया।

कस्तूरबा गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका से राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सक्रियता आरम्भ की, इन्होंने भारत में नागरिक कार्य तथा विरोध एवं प्रदर्शनों में भाग लिया, यथा 1922 में गुजरात के वोरसाड आन्दोलन, 1939 में राजकोट में अंग्रेजों के विरुद्ध अहिंसक विरोध प्रदर्शन तथा 1930 के दशक में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के विभिन्न कार्यक्रमों में सहभागिता की। 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के बाद गिरफ्तार करके पुणे के आगा खाँ पैलेस में बंदी बनाया गया। उन्होंने लागों के अन्दर शिक्षा, अनुशासन और स्वास्थ्य के प्रति जाग्रति उत्पन्न की तथा पर्दे के पीछे रहकर गाँधीजी की सहधर्मिणी के रूप में स्वतन्त्रता आन्दोलन में अभूतपूर्व योगदान दिया।

ननीवाला देवी एक महिला क्रान्तिकारी थी, जो क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिए विख्यात 'युगान्तर पार्टी' की सदस्य थी, क्रान्तिकारी आन्दोलन के समय हथियारों को संग्रहित करना क्रान्तिकारियों को शरण देना, उन्हें प्रोत्साहित करना इस दल की महिलाओं की प्रमुख कार्यशैली थी।

दुर्गादेवी बोहरा 'दि फिलासफी ऑफ बम' के लेखक भगवतीचरण बोहरा की पत्नी थी। क्रान्तिकारियों के मध्य यह 'दुर्गा भाभी' के नाम से प्रसिद्ध थीं। 1927 में लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने के लिए एक बैठक लाहौर में आयोजित की गई, जिसकी इन्होंने अध्यक्षता की। इन्होंने 1928 में साण्डर्स की हत्या के उपरान्त पुलिस को चकमा देकर भगतसिंह और राजगुरु को लाहौर से कलकत्ता पहुँचाया, वह स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास का अद्भुत कृत्य था।

इन्होंने बम्बई के गवर्नर हेली को भी अपनी गोली का निशाना बनाया, जिसमें एक अंग्रेज सैन्य अधिकारी घायल हो गया। बम्बई की घटना के कारण दुर्गा भाभी के विरुद्ध वारण्ट जारी हुआ। 2 वर्ष से ज्यादा समय तक फरार रहने के बाद 12 सितम्बर 1931 को उन्हें लाहौर से गिरफ्तार कर लिया गया, बाद में वह कांग्रेस पार्टी में भी सक्रिय रही।

सुशीला दीदी ने अपनी स्वर्गीय माँ द्वारा उनके विवाह के लिए रखे गये दस तौले सोने को काकोरी के कैदियों को छुड़ाने के लिए मुकदमों की पैरवी के लिए दान दिया था, इन्होंने मेवाडपति नामक नाटक खेलकर इस कार्य हेतु राशि भी एकत्रित की। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में इन्होंने इंदुमति के छद्मनाम का प्रयोग किया और अपनी गिरफ्तारी दी।

दृढ़ एवं आत्मशक्ति से पूर्ण स्वतन्त्रता सेनानी ऊषा मेहता का जन्म 15 मार्च 1920 को सूरत के एक गाँव में हुआ था। गाँधीजी से प्रभावित होकर उन्होंने खादी को अपनाने और स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहभागिता करने का निश्चय किया। 14 अगस्त 1942 को अपने कुछ सहयोगियों के साथ इन्होंने खुफिया कांग्रेस रेडियो का प्रारम्भ किया, जिसके माध्यम से गाँधीजी एवं प्रमुख नेताओं के सन्देशों को जनता तक पहुँचाया जाता था। राममनोहर लोहिया एवं अच्युत पटवर्धन जैसे नेताओं ने इस कार्य में इनको सहयोग प्रदान किया गया। भारत छोड़ो आन्दोलन के समय 'खुफिया कांग्रेस रेडियो' के संचालन के कारण पूरे देश में इनकी पहचान बनी, इस रेडियो प्रसारण के कारण इन्हें पुणे की यरवदा जेल जाना पड़ा।

एक यूरोपीय क्लब, जिस पर 'कुत्तो और भारतीयों को अनुमति नहीं है', चिन्ह को देखकर स्वाभिमानी बंगाली नेता सूर्यसेन ने उस क्लब को ध्वस्त करने की योजना बनाई। इस योजना को कार्यरूप में परिणित करने के लिए प्रीतिलता वद्देदार के नेतृत्व में सात अन्य युवा क्रान्तिकारियों को दायित्व सौंपा गया। 24 सितम्बर 1932 को सभी क्रान्तिकारियों ने मिलकर यूरोपीय क्लब को आग के हवाले कर दिया गया, प्रत्युत्तर में पुलिस अधिकारियों की फायरिंग में प्रीतिलता घायल हो गयीं। उन्होंने गिरफ्तारी से बचने के लिए इक्कीस वर्ष की आयु में साइनाइड खाकर मृत्यु को गले लगाना ज्यादा उचित समझा।

पद्मजा नायडू राष्ट्रीय हितों के प्रति निष्ठावान स्वतन्त्रता सेनानी थी, इन्होंने भारतीयों को खादी का प्रचार करते हुए विदेशी सामान के बहिष्कार करने के लिए प्रोत्साहित किया, 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने पर ब्रिटिश शासन द्वारा इन्हें जेल भेजा गया।

अरुणा आसफ भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी थी, जिन्होंने 1942 में मुम्बई के गोवालिया मैदान में कांग्रेस का झण्डा फहराया था। इन्होंने नमक सत्याग्रह में भाग लिया एवं अन्य लोगों को इसमें सहभागिता के लिए प्रेरित किया। 'इंकलाब', जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मासिक पत्रिका थी, का सम्पादन भी किया। 1932 में अंग्रेजी सरकार द्वारा उन्हें तिहाड़ जेल भेजा गया, जहाँ उन्होंने राजनीतिक कैदियों के प्रति निराशाजनक व्यवहार के विरोधस्वरूप भूख हड़ताल प्रारम्भ की, तत्पश्चात् इन्हें अम्बाला में एकान्त कारावास में डाल दिया गया। इन्होंने भूमिगत आन्दोलनों में भी भाग लिया। 1944 में इन्होंने निरर्थक चर्चा को भूलकर युवाओं को क्रान्ति से जुड़ने के लिए आग्रह किया गया, ये स्वतन्त्रता आन्दोलन की 'ग्रेन्ड ओल्ड लेडी' के नाम से विख्यात हैं।

दुर्गाबाई देशमुख ने गाँधीजी के 'नमक सत्याग्रह' में सहभागिता की। स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय इन्होंने एक वकील, सामाजिक कार्यकर्ता एवं एक सक्रिय राजनेता की भूमिका का निर्वहन किया। इनके द्वारा एक केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की नींव भी रखी गई, जिसका उद्देश्य शिक्षा, महिला, बच्चों, जरूरतमंदों के पुनर्वास तथा उनकी

स्थिति को बेहतर बनाना था। 1930 से 1933 के मध्य अपनी आन्दोलनकारी गतिविधियों के कारण तीन बार जेल भी गईं।

आजाद हिन्द फौज की पहली महिला कैप्टन डॉ0 लक्ष्मी सहगल का जन्म 1914 में एक तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ था। मेडिकल की शिक्षा उपरान्त ये सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित हुईं तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार आन्दोलन में इनकी सहभागिता रही। 1943 में अस्थायी आजाद हिन्द सरकार की केबिनेट में पहली महिला सदस्य बनीं तथा आजाद हिन्द फौज की रानी झाँसी रेजीमेंट में भी सक्रिय भूमिका निभाई। तत्पश्चात् ये कर्नल भी बनीं किन्तु आजाद हिन्द फौज की ब्रिटिश सेना से पराजित होने के कारण इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इन्होंने भारत विभाजन तथा आर्थिक असमानता का निरन्तर विरोध किया। 23 जुलाई 2012 में कानपुर में दिल का दौरा पड़ने पर इनका शरीरान्त हो गया।

आसाम प्रान्त की कनकलता बरुआ का जन्म 22 दिसम्बर 1924 में हुआ था, ये भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान 17 वर्ष की उम्र में कोर्ट परिसर एवं पुलिस स्टेशन भवन पर तिरंगा फहराने की कोशिश के दौरान पुलिस की गोलियों की शिकार हुईं।

भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरु की पत्नी श्रीमती कमला नेहरु का जन्म 1899 में दिल्ली में हुआ था, इन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम के समय होने वाले विभिन्न धरने, जुलूस आदि में भाग लिया व भूख हड़ताल पर भी रहीं और कई बार जेल भी गईं।

इन्दिरा प्रियदर्शिनी का जन्म 19 नवम्बर 1917 को नेहरु परिवार में हुआ था, इनके द्वारा युवक व युवतियों को वानर सेना एवं चरखा संघ में सम्मिलित करने का कार्य किया गया। इन्होंने संवेदनशील प्रकाशनों से सम्बन्धित सामग्री व परिसंचरण कर कांग्रेस नेताओं की भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में सहायता की गयी। ये जुलूस प्रदर्शनों में भाग लेती रहीं, इन्होंने एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज को अपने पिता के घर से पुलिस की नजर बचाकर स्कूल बैग के माध्यम से बाहर ले जाने में सफल रहीं। इन्होंने इण्डियन लीग में भी सक्रिय सहभागिता की। 1942 में इनको पति सहित ब्रिटिश सरकार द्वारा नैनी जेल में डाल दिया गया। इन्होंने गाँधीजी के मार्गदर्शन में दिल्ली दंगा पीड़ित क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका के निर्वहन के कारण भी जेल भेजा गया।

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में विदेशी मूल की महिलाओं का भी योगदान रहा। यथा–मैडम भीखाजी कामा भारतीय मूल की पारसी महिला थीं, इन्होंने विभिन्न देशों में भ्रमण कर भारत की स्वतन्त्रता को न्यायोचित बताते हुए, विदेशी जनमत को भारतीय पक्ष में तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इन्हें जर्मनी की स्टटगार्ड नगर में 1907 में 7वीं अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भारत के प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज, जिस पर 'वंदेमातरम' अंकित था, को फहराने का गौरव प्राप्त है। इन्होंने पेरिस में 'वंदेमातरम' पत्र का प्रकाशन भी किया। भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में सहभागिता हेतु इन्होंने लम्बा निर्वासित जीवन बिताया।

मारग्रेट नोबुल आयरलैण्ड की मूल निवासी थी, इन्होंने स्त्री शिक्षा तथा उनके बौद्धिक विकास के लिये प्रयास किये, 11 फरवरी 1905 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में वायसराय लार्ड कर्जन द्वारा जब भारतीयों का अपमान किया गया तो इन्होंने कड़ाई से उसका विरोध किया, इन्हें भगनी निवेदिता के नाम से भी जाना जाता है, ये अकाल और महामारी के समय में भी पूरी तत्परता से भारतीयों की सेवा में लगी रहीं, तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रहीं।

आयरिश मूल की एनी बेसेन्ट का जन्म 1 अक्टूबर 1847 को लन्दन में हुआ था। यह थियोसिफिकल सोसाइटी, जो हिन्दू धर्म के

उपदेशों का प्रचार करती है, की सदस्य बनीं, ये महिला अधिकारों, जैसे–वोट का अधिकार के लिए ब्रिटिश सरकार को पत्र लिखती रहीं। इन्होंने होमरूल आन्दोलन, जो स्वराज के लिए चलाया जा रहा था, में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया। इन्होंने स्वराज के आदर्शों को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रचार किया तथा ब्रिटिश सरकार की क्रूरता एवं दमनकारी नीतियों, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी समस्याओं के प्रति जागरुकता एवं सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। तिलक के साथ गृह शासन आन्दोलन को प्रारम्भ करने के लिए इन्हें गिरफ्तार भी किया गया। एनी बेसेन्ट ने न्यू इण्डिया नामक समाचार–पत्र में ब्रिटिश शासन की नीतियों का विरोध कर सरकार की कठोर आलोचना की।

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय इंग्लैण्ड में जन्मी नेलीसेन गुप्ता क्रान्तिकारी गतिविधियों के लिए विख्यात रहीं, इन्होंने 1921 में असहयोग आन्दोलन में भाग लिया, जब इनके पति जतीन्द्र मोहन को आसाम बंगाल की रेल हड़ताल के सम्बन्ध में गिरफ्तार किया गया तो नेली ने बागडोर अपने हाथ में ले ली और प्रतिबन्धित खादी बेचने के आरोप में जेल भेज दी गई। 1933 में कोलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद से भाषण देने पर नेली सेनगुप्ता को भी गिरफ्तार कर लिया गया। 23 अक्टूबर 1973 को कोलकता में इनका देहावसान हो गया।

उपरोक्त महत्त्वपूर्ण महिलाओं के अतिरिक्त देशभर में अनेक महिलाओं ने अपने स्तर पर स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपनी भूमिका का निर्वाह किया। आदिवासी बिरसा मुंडा की पत्नी भाकी ने अंग्रेजों के साथ संघर्ष किया। 1931–1932 में नागारानी विडाल्यू ने मणिपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध चल रहे संघर्ष का नेतृत्व किया, अंग्रेज सरकार से इन्हें करमाफी का वायदा किया गया और इनकी गिरफ्तार पर पुरस्कार की घोषणा की, ये स्वतन्त्रता प्राप्ति तक जेल में रहीं। विजयलक्ष्मी पण्डित द्वारा भी सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया गया, फलतः जेल जाना पड़ा, विभिन्न आन्दोलनों की तैयारी में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। 1931 में शान्ति घोष और सुनिति चौधरी द्वारा डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट स्टीवेस की हत्या, 6 फरवरी 1932 में बंगाल गवर्नर पर वीनादास द्वारा गोली चलाना, सुहासिनी अली तथा रेणुसेन के द्वारा 1930 से 1934 के मध्य बंगाल में क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रियता, 1912–1914 में जतरा भगत द्वारा बिहार में जनजातियों से सम्बन्धित ताना आन्दोलन, 1905–1906 में बंगाल विभाजन विरोधी आन्दोलन में महिलाओं की बड़ी संख्या में सहभागिता आदि अनेक घटनायें हैं, जो महिलाओं की स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहभागिता को दर्शाती है।

देश के स्वाधीनता संग्राम में प्रमुख महिला नायकों के योगदान के विवेचन के पश्चात् आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका कई धाराओं में परिलक्षित होती है, प्रथम स्वयं के राज्य की सुरक्षा हेतु महिला शासकों एवं उनसे जुड़ी वीरांगनाओं की सहभागिता, द्वितीय देश के प्रमुख राजनीतिक परिवारों से सम्बन्धित महिलाओं की सहभागिता, तृतीय उच्च शिक्षित महिलाओं की सहभागिता। कुछ विदेशी मूल की महिलाओं द्वारा भी भारत की स्वतन्त्रता के लिए पृष्ठभूमि निर्माण में अहम भूमिका का निर्वाह किया गया, इसके अतिरिक्त भारतीय वीरांगनायें क्रान्तिकारी और सैनिक गतिविधियों में भी संलग्न रहीं। बंग–भंग के विरोध स्वरूप आन्दोलन एवं स्वदेशी, बहिष्कार आदि आन्दोलन में आम महिलाओं के द्वारा भी विशिष्ट रूचि ली गयी, उनकी सहभागिता के बिना यह आन्दोलन प्रभावी नहीं हो सकते थे। इस आन्दोलन में एक विशिष्ट तथ्य दृष्टव्य है कि महिलाओं द्वारा स्वयं के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक अधिकारों के लिए कोई विशिष्ट संगठित प्रयत्न नहीं किये गये, देशभक्ति, अंग्रेजी शासन से मुक्ति जैसे उद्देश्यों तक उनकी भूमिका सीमित रही। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्वतन्त्रता

आन्दोलन में महिलाओं की सहभागिता विशिष्टतः उच्च अभिजन वर्ग की महिलाओं द्वारा पारिवारिक सीमाओं द्वारा मर्यादित एवं निर्देशित रही। इनमें से कुछ विशिष्ट महिलाओं द्वारा स्वतन्त्रता के पश्चात महत्त्वपूर्ण पदों पर सफलतापूर्वक अपनी भूमिका का निर्वहन किया गया। सामान्य रूप से भी कुछ महिलाओं द्वारा स्वतन्त्र रूप से स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहभागिता की गई, लेकिन भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में उन्हें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं हुआ है, पितृसत्तात्मक समाज में यही अपेक्षित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Narayan Badri, Women Heroes and Dalit Asseration in North India, Culture Indentify and Politics, Sage Publication, 2006
2. Verma Vrindavanlala Sahaya, Amita, Lakshmi Bai, The Rani of Jhansi, Prabhat Prakashan, 2001
3. मेहरोत्रा दीप्ति प्रिया, भारतीय महिला आन्दोलनः कल आज और कल, सम्पूर्णा ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2001
4. माथुर एल0पी0, भारत की महिला स्वतन्त्रता सेनानी, आविष्कार पब्लिकेशन, जयपुर, 2006
5. बाला ऊषा, भारत की वीरांगनायें, प्रविसूप्रम, भारत सरकार, 2006
6. व्होरा आशा रानी, महिलाएँ और स्वराज्य, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1988
7. व्होरा आशा रानी, क्रान्तिकारी महिलाएँ, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1988